एक भगवान?
या
अनेक भगवान?

कला मामनी

अब्दुल्ला अदियार

द्वारा प्रकाशित

MAS FOUNDATION TRUST

एमएएस फाउंडेशन ट्रस्ट
19 ठाकर स्ट्रीट पुरसावलकम
चेन्नई 600 084
88388 92393

ek bhagavaan?
ya anek bhagavaan?

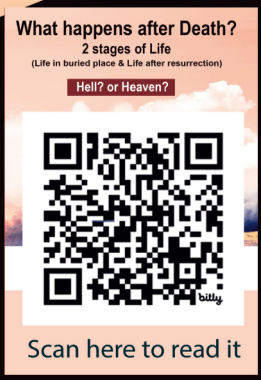
God had created the Universe and estableshed Adam (the first man) on the earth to live based on the following Three main Priciple only.
Until the doomsday these three priciples must be adhered by all.
You and your descendants must know and follow it in order to attain Paradise after death. Here are they:



Monotheism



Prophethood



Life after Death

एक भगवान?
या
कई भगवान?

'कला मामनी'
अब्दुल्ला अदियार

प्रकाशक

MASFOT
Raise Yourself To Help Mankind
NABA
MAS FOUNDATION TRUST

एमएएस फाउंडेशन ट्रस्ट
ठाकर स्ट्रीट पुरसावलकम
चेन्नई 600 084

प्रस्तावना

इस पुस्तक के लेखक अडियार, 70 और 80 के दशक में तमिलनाडु में एक प्रभावशाली व्यक्तित्व थे, जिन्हें भारत के मूर्तिपूजकों की गहरी समझ थी. बाद में गहन शोध के बाद उन्होंने पूरे दिल से इस्लाम और उसके सिद्धांतों को स्वीकार कर लिया और अपने लोगों को उस एकेश्वरवादी सिद्धांत की ओर बुलाया। इस्लाम अपनाने के बाद उन्होंने अपना नाम बदलकर अब्दुल्ला अदियार रख लिया।

"कलईमामणि" (तमिलनाडु राज्य सरकार की मानद उपाधि) अब्दुल्ला अदियार ने पवित्र कुरान में एकेश्वरवादी छंदों को ध्यान से पढ़ा, समझा और दुनिया भर के सभी मूर्तिपूजकों को सोचने, विचार करने की ओर आमंत्रित करने के लिए छंदों को चुना और अपनी टिप्पणियाँ दर्ज कीं। ताकि उन गलतियों (बहुदेववादी विश्वास) का एहसास करें जो वे सभी कर रहे हैं।

हालाँकि ऐसी कई किताबें हैं जो इस्लाम के एकेश्वरवादी सिद्धांत के बारे में बात करती हैं, मरहूम अब्दुल्ला अदियार की किताब उनमें से सबसे अलग है।
इस पुस्तक का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि, लेखक ने सब कुछ प्रश्न और उत्तर पद्धति में रखा है ताकि संदेश पाठकों के लिए बिल्कुल स्पष्ट हो जाए।
इस किताब का मूल संस्करण तीन दशक पहले तमिल भाषा में जारी किया गया था।
पूरे भारत में हिंदी भाषा बोलने वालों के लाभ के लिए इसे हिंदी में जारी किया जा रहा है।

यह सबसे अच्छा उपहार है जो कोई भी छोटे बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी उम्र के लोगों को दे सकता है। एक बार इसे पढ़ने के बाद आप इसे दूसरों तक भी पहुंचा सकते हैं।

चूंकि हम एक उन्नत तकनीकी युग में हैं जहां चीजें तेजी से चल रही हैं, हम भी इसे एक ई-बुक - पीडीएफ संस्करण के रूप में जारी करते हैं ताकि कोई भी इसे सत्य के चाहने वालों के लिए किसी भी सोशल मीडिया के माध्यम से साझा कर सके।

अल्लाह लेखक और इसे बढ़ाने में शामिल अन्य लोगों के इस काम को स्वीकार करे। उन सभी को स्वर्गीय जीवन का आशीर्वाद मिले! तथास्तु।

एम.ए.एस फाउंडेशन ट्रस्ट

निर्देशिका.....

1. एक भगवान? या कई भगवान?..... 7
2. क्या दो भगवान नहीं हैं?..... 14
3. बहुदेववाद का वेद..... 19
4. इस्लाम एक पुराना धर्म है..... 21
5. क्या छवियों (चित्रों)की पूजा की जा सकती है?..... 23
6. क्या एक चित्र (मूर्ति) आपको केंद्रित कर सकता है?..... 27
7. क्या मूर्तियों में शक्ति होती है?..... 29
8. क्या प्राकृतिक शक्तियाँ भगवान होती हैं?..... 32
9. क्या भगवान हमारे भीतर है? क्या हम भगवान हैं?..... 36
10. क्या अवतार भगवान हैं?..... 39
11. क्या महिला भगवान को स्वीकार किया जा सकता है?... 41
12. वे जो भगवान में विश्वास रखते हैं..... 44
13. आपका भगवान कैसा है?..... 48
14. क्या भगवान को प्रसाद की आवश्यकता है?..... 51
15. पुराने धर्म को छोड़ना चाहते हैं?..... 54

अनुबंध

मुसलमान बनना और मुसलमान कैसे बनें?..... 59

टिप्पणी

इन आयतों में पाया जाने वाला अल्लाह शब्द भगवान के लिए अरबी शब्द है।

एक भगवान? या कई भगवान?

क्या एक ही भगवान है? या कई भगवान? इसके बारे में तर्कपूर्ण बहस ज्ञान का प्रकाश डालेंगी।
आइए इस विषय पर अधिक स्पष्टता के लिए इसे प्रश्न-उत्तर पद्धति के रूप में देखें.

सवाल:

इस्लाम जो भगवान का सिद्धांत कहता है और अन्य धर्म जो भगवान का सिद्धांत कहते हैं, उनमें क्या अंतर है?

जवाब: इस्लाम कहता है कि भगवान एक ही है, बिना किसी संदेह - तनाव – मैल के। अन्य धर्म कई देवताओं की महिमा करते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

लेकिन यदि पूछा जाए कि इन कई देवियों - देवताओं में से कौन वह है जो पर्यावरण, जीवन का पोषण करता है और दुनिया सहित पर्यावरण की रक्षा करता है? बहुदेवता के पूजक हर एक देवता का अलग-अलग उत्तर (नाम) देंगे और एक दूसरे के कहने से सहमत नहीं होंगे।

भारत में एक विशेष धर्म में, जानकारी यह है कि 'निर्माता भगवान' भी किसी अन्य भगवान द्वारा बनाया गया है, लेकिन पवित्र कुरान में कहा गया है कि अल्लाह पूरे ब्रह्मांड का निर्माता, संरक्षक और पालनकर्ता है।

वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ बनाया जो धरती पर है। फिर उसने स्वयं को स्वर्ग की ओर निर्देशित किया, [उसका अस्तित्व सारी सृष्टि से ऊपर है], और उनसे सात स्वर्ग बनाए, और वह सभी चीजों को जानता है।
(कुरान 2:29)

आकाश और पृथ्वी के सर्वोत्तम निर्माता। जब वह किसी मामले का फैसला करता है, तो वह केवल इतना कहता है, "हो," और "वह हो जाता है"।
(कुरान 2:117)

उसने सच्चाई में आकाश और पृथ्वी को बनाया। जो कुछ वे उसके साथ जोड़ते हैं, वह उससे भी ऊँचा हैI (कुरान 16:3)

अल्लाह सभी चीज़ों का निर्माता है, और वह सभी चीज़ों का संचालक हैI
(कुरान 39:62)

वही अल्लाह है, तुम्हारे प्रभु, सभी चीजों के निर्माता; उसके सिवा कोई देवता नहीं है, तो तुम भटके कैसे हो? (कुरान 40:62)

कुरान में ऐसे अनेक प्रमाण मौजूद हैं कि भगवान एक है। लेकिन क्या उनके बहुदेवता (पॉलीथीज़म) के लिए उनका तर्क समर्थन करने के लिए कोई पवित्र ग्रंथ है? क्या उसमें इस तरह की कोई पंक्तियाँ हैं? नहीं।

क्या अनेक भगवानों की पूजा का समर्थन करने वाला कोई धर्मग्रंथ है? पवित्र कुरान पूछता है
या क्या हमने उन्हें क़ुरान से पहले की किताब दी है जिसका वे पालन कर रहे हैं? (कुरान 43:21)
बल्कि, वे कहते हैं, "वास्तव में, हमने अपने पूर्वजों को एक धर्म पर पाया, और हम उनके नक्शेकदम पर [सही] निर्देशित हैं।" (कुरान 43:22)
यह सच है! बहुदेवतावाद का प्रमाण यह है कि "हमारे पूर्वजों ने कई भगवानों की पूजा की थी और हम भी करते हैं।"

लेकिन क्या वक्तव्य सत्य है? नहीं! पूर्वज और पूर्वजों के पूर्वज ने केवल एक ही भगवान की पूजा की थी। बीच में आनेवाले लोगों ने बहुदेवतावाद को प्रस्तुत किया। इसलिए, यह सत्य नहीं है कि हम हमारे पूर्वजों के पथ पर चलते हैं और कई भगवानों की पूजा करते हैं!

कैसे?

अगर हम दो हजार साल पहले के इतिहास को देखें, तो तब पूजे जाने वाले भगवान अब मौजूद नहीं हैं। जो भगवान अब पूजे जाते हैं, वो तब मौजूद नहीं थे। रोजाना नए भगवान प्रकट हो रहे हैं। यह खबर है कि वे खुद कहते हैं कि अब कई भगवानों की पूजा नहीं होती और मन्दिर नष्ट हो गये है क्योंकि कोई उनकी पूजा करने के लिए नहीं बचा है।

क्या वे (बहुदेवता वादी) अपने भगवानों को पूजने के तत्वों में दृढ़ हैं? वह भी नहीं!

उदाहरण के लिए - यदि उन्हें किसी नास्तिक से बहस करनी है जो कहता है कि कोई भगवान नहीं है, तो जब वे यह तर्क देने लगते हैं कि भगवान है तो वे अपना तर्क कैसे शुरू करते हैं?

इस पृथ्वी को किसने बनाया? ब्रह्माण्ड की रचना किसने की? जीवन का पालन-पोषण कौन करता है? "क्या कोई महान शक्ति नहीं है जो यह सब करती है?" उन्हें इसी तरह पूछना चाहिए, है ना?

क्या वे इस तरीके से बहस कर सकते हैं? क्या इन सब को करने वाली दो शक्तियाँ नहीं हैं? क्या तीन भगवान नहीं हैं?

क्योंकि आस्तिक दर्शन नास्तिक को तर्कों में लपेटकर सत्य का बोध कराने की शक्ति रखता है। बहुदेववाद में वह शक्ति बिल्कुल नहीं है।

यदि हम वह प्रश्न उन बहुदेववादियों की ओर मोड़ दें जो उन्होंने नास्तिकों से पूछा है तो वे क्या करेंगे?

कहो, "तुम्हें आकाश और पृथ्वी से कौन प्रदान करता है? या कौन सुनने और देखने को वश में रखता है और कौन जीवित को मरे हुओं में से निकालता है और कौन मरे हुए को जीवित में से निकालता है और कौन [प्रत्येक] मामले का प्रबन्ध करता है?" वे कहेंगे, "अल्लाह," तो कहो, "तो क्या तुम उससे डरने वाले नहीं हो?" (कुरान 10:31)

ये सभी सवाल हैं जिन्हें पवित्र कुरान पैगंबर मुहम्मद से पूछने के लिए कहता है जो उस समय जीने वाले बहुदेवतावादी थे। और 1400 साल पहले के बहुदेवतावादी इन सवालों का जवाब नहीं दे सकते थे, और आज के बहुदेवतावादी भी इनका जवाब नहीं दे सकते।

व्यवहार में भी, जब बहुदेववादी पीड़ित होते हैं या सताए जाते हैं तो वे क्या कहते हैं?

तुरंत वे कहते हैं, "हमारे ऊपर एक भगवान है, वह हमारा ध्यान रखेगा।" वे नहीं कहते, "दो भगवान हैं, पाँच भगवान हैं, और वे तुम्हारी शिकायत करने पर आपकी देखभाल करेंगे"!"

इसी तरीके से पवित्र कुरान में कहा गया है।

फिर जब विपत्ति तुम्हें छूती है, तो तुम सहायता के लिए उसके पास रोते हो। …… (कुरान 16:53)

ऐसे और भी अजीब बहुदेववादी हैं जो सिद्धांततः स्वीकार करते हैं कि भगवान एक है। व्यवहार में, वे कई भगवानों पर विश्वास करते हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं।

भगवान एक है! एक रहो! (थिरुमंदरम, थिरुमूलर)

भगवान आपको आशीर्वाद दें!

वे ऐसे सभी गीत गाते हैं लेकिन व्यवहार में वे कई देवताओं की पूजा करते हैं। सभी धर्म आज तक इसी असमंजस की स्थिति में हैं, लेकिन इस्लाम इस बात पर अडिग है कि भगवान एक ही है।

* सिद्धांत में एक ही भगवान।

*इस्लाम स्पष्ट रूप से कहता है कि अभ्यास में भगवान एक है

जब आप किसी मुसलमान से मिलते हैं, चाहे वह ग्लेशियर से हो, समृद्ध ध्रुवीय क्षेत्र से हो, पर्वतीय क्षेत्र से हो, नदी के किनारे के क्षेत्र से हो, तटीय गांवों से हो, या रेगिस्तानी भूमि से हो, और पूछें कि आपके कितने भगवान हैं या आप उनकी पूजा करते हैं?
जब पूछा जाता है, तो वे सब मिलकर एक ही आवाज़ में जवाब देते हैं -

हम केवल एक ही भगवान की पूजा करेंगे.... (कुरान 2:133)

और तुम्हारा भगवान एक ही भगवान है। उसके सिवा कोई

देवता [पूज्य] नहीं है। (कुरान 2:163)

अल्लाह - उसके सिवा कोई भगवान नहीं है। (कुरान 2:255)

वाकई, अल्लाह केवल एक ही भगवान है। (कुरान 4:171)

और एक ही भगवान के सिवा कोई भगवान नहीं है।

(कुरान 5:73)
वाकई, वह केवल एक ही भगवान है (कुरान 6:19)
अल्लाह की पूजा करो; तुम्हारे पास उसके सिवा कोई भगवान नहीं है। (कुरान 7:65)

"आकाश और पृथ्वी के स्वामी कौन है?" कहो, "अल्लाह।" (कुरान 13:16)

"अपने लिए दो भगवान न लें। वह [यानी, अल्लाह] केवल एक ही भगवान है। (कुरान 16:51)

[अल्लाह] एक ही भगवान है, (कुरान 16:51)

कहो, "मैं तो सिर्फ तुम जैसा एक आदमी हूँ, जिसे यह प्रकट किया गया है कि तुम्हारे भगवान एक ही भगवान है। (कुरान 18:110)

पवित्र कुरान में ऐसी अनेक आयतें इस बात पर जोर देती हैं कि " भगवान एक है"। इसलिए, इस्लाम के धर्मशास्त्र में स्पष्टता, सच्चाई और महिमा है।

मुसलमान वे हैं जो केवल एक भगवान को ध्यान में रखते हैं और सिर झुकाकर और दोनों हाथ उठाकर उसकी पूजा करते हैं।

क्या दो भगवान नहीं हैं?

सवाल: दूसरे धर्म से आने वाला मेरा एक मित्र पूछता है, "हमारे पास केवल एक ही भगवान क्यों होना चाहिए? दो या तीन भगवान होने में क्या बुराई है?"

जवाब: "भगवान को रखें?" क्या? क्या वह फूल है? या माल है? कहने के लिए, " आइए एक के बजाय दो या तीन लें " - क्या भगवान आपकी पसंद की वस्तु है?

"रखना" आस्तिकता के विपरीत है। आस्तिकता यह विश्वास है कि " भगवान ने संपूर्ण जीवित प्राणियों सहित ब्रह्मांड का निर्माण किया"।

एक नास्तिक यह तर्क क्यों देता है कि मनुष्य ने अपनी कल्पना के अनुसार भगवान की रचना की? इसका दूसरा पक्ष जो दो या तीन या अधिक भगवानों को "पकड़ने" या "रखने" का दावा करता है।

उन लोगों पर करीब से नज़र डालें जो भगवान को दो, तीन या कई भगवानों में गिनते हैं।

वे यह स्थापित करने के लिए कहानियाँ बनाते हैं कि उनके प्रत्येक भगवान के पास अधिक शक्ति है। फिर उनके बीच प्रतियोगिता शुरू हो जाती है और वे एक भगवान को दूसरे से श्रेष्ठ बताने के लिए अविश्वसनीय कल्पित गाथा रचते हैं।

कुछ मिथकों में एक भगवान की दूसरे भगवान से लड़ाई की झूठी कहानियाँ हैं - युद्ध के मैदान में लड़ाई। वे एक भगवान की हार और दूसरे भगवान की जीत के साथ कहानी समाप्त करते हैं, विरोधी इसे "झूठ" कहते हैं और अपमानजनक कहानियाँ और बहसें सामने आती हैं। परिणाम? इतिहास कहता है कि भक्तों के बीच झड़पें, झगड़े और यहाँ तक कि हत्याएँ भी हुईं।

भारत के इतिहास में, खासकर दक्षिणी भारत के इतिहास में "शिव-विष्णु" की लड़ाई बहुत महत्वपूर्ण रही थी। उपरोक्त लड़ाई के कारण विष्णु में आस्था रखने वाले रामानुजराज के शिष्य कूर्थलवन नामक वैष्णव की आंखें निकाल ली गईं।

शैव धर्म के इतिहास के अनुसार, समाना-शैव युद्ध के दौरान समाना से शैव बनने के लिए अप्पार उर्फ तिरुनावुकारसर को पत्थर में बांधकर समुद्र में फेंक दिया गया था।

इसी प्रकार, एक ऐतिहासिक रिपोर्ट है कि ज्ञानसंबंदर के काल में आठ हजार जैनियों को फाँसी पर लटका दिया गया और उनके प्राण त्याग दिये गये।

सामान्य ज्ञान वाले लोग जो ये सब पढ़ते हैं वे एक और विकृत निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं। वे नास्तिकता की स्थिति में पहुँच जाते हैं जहाँ उन्हें न तो भगवान चाहिए और न ही धर्म।

जो लोग एक ही धर्म में कई भगवानों को स्वीकार करते हैं, वे सोचते हैं कि उन्हें अपने भगवानों का मूल्य बढ़ाना होगा और उन भगवानों के लिए प्रेम, विवाह और प्रसव की कहानियाँ बनानी होंगी! इसका परिणाम क्या है?

* वे भगवान को - सामान्य मानवों के स्तर तक ले आते हैं।

कुछ अन्य - दुष्ट शब्द - कुछ जहरीले - भगवान को वासनामय बताते हैं। उन्होंने झूठी और कामुक कहानियाँ गढ़ीं और लिखीं, इसका परिणाम क्या है?

वे भगवान को उसके गरिमामय और राजसी प्रकृति से घटाकर मानव स्वभाव में वर्णित करते हैं।

इन कामुक कहानियों के पाठक पूछते हैं, "क्या भगवान ऐसा है?" इस पर विचार करते हुए, वे ऐसे लोग बन जाते हैं जो कहते हैं, "इस अभागे आदमी से कमतर कोई भगवान नहीं हैं।"

नास्तिक उन लोगों में "प्रबल" नहीं दिखते, जो एक भगवान में विश्वास करते हैं।

बहुदेववादियों में नास्तिक तूफान बनकर उभरे। वे बार-बार और अधिक प्रकट होते रहेंगे।

इसलिए बहुदेववाद नास्तिकता का स्रोतऔर उत्पत्ति है, और यह वास्तव में सर्वोच्च सत्य है।

देखा जा सकता है कि केवल एक भगवान पर विश्वास रखने वाले इस्लाम में भगवान की शुद्ध और उच्च व्याख्या है।

अल्लाह - पूर्णत: दयालु, विशेष रूप से दयालु... (क़ुरआन 1:3)

उसका कोई साथी नहीं है।... (क़ुरआन 6:163)

उसकी कोई संतान नहीं है।...
[और **ये लोग आश्वस्त हैं कि भगवान के बच्चे हैं। (नहीं) वह महिमामंडित है**, परन्तु जो कुछ स्वर्ग और पृथ्वी में है वह सब उसी का है, और सब उसकी आज्ञाओं के अधीन हैं।...] (क़ुरआन 2:116)

वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ बनाया जो धरती पर है... (क़ुरआन 2:29)

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है - सारे संसार का स्वामी... (क़ुरआन 1:2)

और वहां तुम्हारे प्रभु का चेहरा [1] रहेगा, जो महिमा और सम्मान का स्वामी है... (क़ुरआन 55:27)

प्रतिकार के दिन का प्रभु... (क़ुरआन 1:4)

वास्तव में, अल्लाह आकाशों और धरती के अदृश्य पहलुओं को जानने वाला है। निस्संदेह, वह सीने के भीतर की चीज़ को जानने वाला है।... (क़ुरआन 35:38)

वाक़ई, अल्लाह सभी चीजों पर पूर्णत: समर्थ है।.. (क़ुरआन 16:77)

"आसमानों और ज़मीन में कोई भी अदृश्य को सिवाए अल्लाह के इलावा

नहीं जानता… (क़ुरआन 27:65)

अल्लाह सभी चीजों को जानने वाला है।... (क़ुरआन 9:115)

वास्तव में, अल्लाह अनैतिकता का आदेश नहीं देता (क़ुरआन 7:28)

अल्लाह आपके लिए आसानी चाहता है और आपके लिए कठिनाइयों की इच्छा नहीं करता... (क़ुरआन 2:185)

अल्लाह शांति के घर [यानी, स्वर्ग] में आमंत्रित करता है।... (क़ुरआन 10:25)

इस्लाम में भगवान के बारे में ऐसे नेक शब्दों का जिक्र है। जब हम इन्हें पढ़ते हैं तो हमें भक्ति और भय की गहरी अनुभूति होती है।

* आदरणीय भगवान!
* एक सभ्य धर्मनिष्ठ भक्त

दोनों स्थितियाँ प्रकट होती हैं। केवल एक भगवान की पूजा करने से ही पुजारी और पूज्य को शुद्ध और प्रतिष्ठित स्थिति प्राप्त होती है।

* एक ही भगवान सच है! इसलिए हम कहते हैं कि केवल एक ही भगवान है।

बहुदेवतावाद का वेद.

सवाल: आपने कहा, "जो बहुदेववादी हैं उनके लिए वेदों में कोई साक्ष्य नहीं है।"बहुदेववादी कुछ को अपना धर्मग्रन्थ बताते हैं! आप क्या कहते हैं?

जवाब: वे सभी जिसका वे अपने धर्मग्रंथों के रूप में उदाहरण देते हैं - वेदों के इस्लामी सिद्धांतों की मूल अवधारणा से भिन्न है।

वेद एक प्रामाणिक ईश्वरीय रहस्योद्घाटन होना चाहिए, शुद्ध, बिना किसी विरोधाभास के अपरिवर्तनीय होना चाहिए और इसमें इस्लामी सिद्धांत के अनुसार अतीत, वर्तमान और भविष्य के स्पष्ट प्रमाण होने चाहिए।

बाइबिल की शुरुआत में इसमें पैगम्बरों का इतिहास है और बीच में भगवान द्वारा बोले गए छंद आते हैं।

इसके बाद के हिस्से में, पैगंबर यीशु (ईसा मसीह) का इतिहास और उनकी सलाह पर चर्चा की जाएगी।

ऐसा कहा जाता है कि हिन्दू धर्म के चार वेद ऋषियों के भगवान के लिए छंद (भजन) हैं।

यहां तक कि भगवद गीता भी मनुष्य के रूप में अवतरित कृष्ण के शब्द प्रतीत होते हैं।

लेकिन पूरा कुरान एक पवित्र शास्त्र है जिसे भगवान ने अपने शब्दों के रूप में दिया है, जिन्होंने मानव जन्म नहीं लिया।

* पूरे कुरान में यह कहा गया है कि "केवल एक ही भगवान है और कोई अन्य देवता नहीं है।"

हमें एक संदेश पर करीब से नज़र डालने की ज़रूरत है। यहां तक कि वेद भी, जैसा कि कई बहुदेववादी दिखाते हैं, इस बात से इनकार नहीं करते कि "भगवान एक है"। वे इसके ख़िलाफ़ बहस करने के लिए आगे नहीं आते हैं।

कोशिश करें और बहुदेवतावादी लोगों को इस पर बहस करने के लिए बुलाइए। वे इस चर्चा में नहीं आएंगे। अगर आ भी गए , तो वे असफल रहेंगे। क्योंकि उनका पूरा यकीन नहीं है कि वे जिन प्रामाणिकता पर निर्भर करते हैं, वह सच है। पूर्ण विश्वास के बिना उनका तर्क जीत नहीं सकता।

* इस्लामी इतिहास एकेश्वरवाद और बहुदेववाद के बीच एक बहस और लड़ाई है।

इस्लाम एक पुराना धर्म है

सवाल: यह तो नई खबर है! इसके बारे में विस्तार से बताएं।

जवाब: यह मानना ग़लत है कि "पैगंबर मुहम्मद अरब देश में प्रकट हुए और एक नए भगवान और एक नए धर्म की स्थापना की"।

मक्का में अल्लाह की इबादत के लिए पहला प्रार्थना स्थल स्थापित किया गया। वे अरब लोग अपने नाम के साथ अब्दुल्ला (अल्लाह का गुलाम) नाम भी रखते थे। पैगम्बर के पिता का नाम भी अब्दुल्ला था।

लेकिन अरब लोग उस एक भगवान के साथ कई देवताओं की पूजा करने लगे, जिनका नाम अल्लाह (भगवान के लिए अरबी शब्द) था। वक्त के साथ-साथ इन अरब लोगों ने उस प्रार्थना स्थल में (जहां पहले कोई मूर्तियाँ नहीं थीं) कई मूर्तियाँ डाली और कहा कि वे उप-देवताएँ और सह-देवताएँ हैं।

यह उन अनेक देवताओं के विरुद्ध था कि पैगंबर ने - भगवान की कृपा से - बहस की और सभी को केवल एक भगवान की पूजा करने की चेतावनी देकर भगवान के मार्ग पर लाने का प्रयास किया।

आज हमारे (भारत) देश में और दुनिया में (बहुत से अन्य देशों में) लोग कई

देवताओं की पूजा कर रहे हैं। इसके खिलाफ, इस्लाम का काम आज उन्हें एक ही भगवान की पूजा करने के लिए बुलाना है।

हम यह काम करते हैं, तो बहुदेवता पूजक अलग-अलग तरीके से आएंगे। वे कहते हैं कि हमारा धर्म सहिष्णु है और स्वीकार्य भी है और विनम्रता से कहते हैं, "हम आपके अल्लाह को हमारे देवताओं में शामिल करते हैं।"

लेकिन जिनका धार्मिक सिद्धांत है कि केवल एक ही भगवान की पूजा करनी चाहिए, उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया है और आगे भी स्वीकार नहीं करेंगे।

पैगम्बरों के इतिहास को ध्यान से देखें तो उन्होंने एक भगवान की पूजा करना छोड़ने वाले लोगों के खिलाफ काम किया और कई देवताओं की पूजा करने की चेतावनी दी। चेतावनी देने वालों के रूप में पैगंबरों का इतिहास पैगंबर मोहम्मद (भगवान की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के समय के साथ समाप्त हो जाता है और उसके बाद, बहुदेववाद के खिलाफ एक धार्मिक दर्शन का प्रसार करने की जिम्मेदारी उन लोगों की है जो पैगंबर मोहम्मद (भगवान की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के मार्ग पर विश्वास करते हैं। .

क्या छवियों (चित्रों)की पूजा की जा सकती है?

सवाल: कुछ लोग चर्चा के लिए पूछते हैं। कोई व्यक्ति, एक देवता अर्थात एक भगवान को स्वीकार करता है। लेकिन क्या वह एक चित्र - मूर्ति के माध्यम से उस एक भगवान की पूजा कर सकता है?

जवाब: उसे इस प्रकार पूजा करने से पहले हमारे सवालों के जवाब देना चाहिए।

1. क्या उपासकों ने कभी किसी छवि (प्रतिमा) में बनी कोई चीज़ जीवित देखी है?
2. पूजा करने वालों को छोड़ो। क्या चित्र और मूर्ति निर्माताओं ने उन देवताओं को वास्तविक रूप में देखा है?

अगर आप कुछ ऐसा बनाते हैं जो आप व्यक्तिगत रूप में नहीं देखते हैं और उसे मूर्ति के रूप में नकल करते हैं, तो इसे कल्पना कहा जाता है!

* वे जो भगवान को व्यक्तिगत रूप में नहीं देखे हैं, उन्हें चित्र बनाना और मूर्तियों में नकल करना "झूठ" है!

* इस्लामी दर्शन के अनुसार कोई भी भगवान को व्यक्तिगत रूप में

नहीं देख सकता: अदृश्य।
* इस्लाम इसे केवल "झूठ" ही नहीं मानता है, बल्कि हमारी इच्छा के अनुसार उन्हें छवि बनाने का भी 'पाप' मानता है, जिन्हें हम देख नहीं सकते।
* ऐसा करना न केवल हत्या और चोरी से भी बड़ा पाप है, बल्कि क्योंकि यह भगवान के बारे में झूठ है, इसलिए इस्लाम इसे "अक्षम्य पाप" के रूप में परिभाषित करता है।
नास्तिकों का कहना है कि भगवान को मनुष्य की कल्पना द्वारा बनाया गया था, और ये मूर्तियाँ और चित्र ही उस पर "हाँ" कहने का एकमात्र तरीका हैं, इसलिए जैसे नास्तिकता एक अक्षम्य पाप है, वैसे ही यह एक अक्षम्य पाप है, भले ही भगवान को एक मूर्ति में बनाया गया हो या छवि!
क्या सही है कि एक बड़े पत्थर से मूर्ति का निर्माण किया जाए और भगवान के लिए अपनी कल्पना पर एक चित्र बनाया जाए, जो पूरे ब्रह्मांड (पृथ्वी, अंतरिक्ष, पहाड़, सूरज, गैलेक्सी, सोलर सिस्टम आदि) और जीवों को नियंत्रित करने की बहुत अधिक शक्ति है?
इसलिए यह सही है कि इसे "झूठ" और "भगवान द्वारा अक्षम्य पाप " के रूप में माना जाता है!
पवित्र कुरान कहता है।
निःसंदेह अल्लाह ये नहीं क्षमा करेगा कि उसका साझी बनाया जाये[और उसके सिवा जिसे चाहे, क्षमा कर देगा। जो अल्लाह का साझी बनाता है, तो उसने महा पाप गढ़ लिया। (कुरान ' 4:48)
निःसंदेह, अल्लाह इसे क्षमा[नहीं करेगा कि उसका साझी बनाया जाये और इसके सिवा जिसे चाहेगा, क्षमा कर देगा तथा जो अल्लाह का साझी बनाता है, वह (दरअसल) कुपथ में बहुत दूर चला गया। (कुरान 4:116)
और भी कुरान की ऐसी कई आयतों में कहा गया है कि "दूसरों को

उसके साथ जोड़ना पाप है।"
इसे अक्षम्य पाप क्यों माना जाता है? वे भगवान की मूर्तियाँ और चित्र कैसे स्थापित करते हैं? कुछ लोग मानव रूप में हाथ, पैर और चेहरा रखकर चार भुजाओं, आठ भुजाओं और सोलह भुजाओं का भ्रम दिखाते हैं।

इसी प्रकार भारत में कुछ भगवानों के हाथों में हथियार भी दिये गये हैं। सर्वशक्तिमान के लिए हथियार क्यों? सुरक्षा के लिए? या दूसरों को नष्ट करने के लिए?
* भगवान जो कुछ भी सोचता है उसे करने की शक्ति रखता है, भगवान के लिए हथियार? -, क्या यह उसे कमज़ोर - शक्तिहीन नहीं दिखाता?
* जब कुछ लोग महिला भगवानों की मूर्ति बनाते हैं तो महिलाओं के गुप्तांगों को तराशना कितना बड़ा पाप है?
कहानी यह है कि एक भारतीय चित्रकार ने अपनी प्रेमिका (राजा की बेटी - राजवंश) को देवी के रूप में पेंट किया। किसी पुरुष की प्रेमिका को देवी मानना और पूजना कितना बड़ा पाप होता है?
अगर आप भगवान को तराशे हुए पत्थर से बनायेंगे, मूर्ति बनायेंगे, चित्र बनायेंगे और कहेंगे, "यह भगवान है" - तो भगवान नाराज होंगे या नहीं?उदाहरण के लिए, क्या आपको गुस्सा आएगा यदि कोई व्यक्ति आपकी ओर देखे बिना आपकी तस्वीर बनाता है - और आपकी तस्वीर को - एक मूर्ति बनाता है और किसी से कहता है कि आप यही हैं?
अगर कोई आपको दिखाए कि उस मूर्ति और तस्वीर में आपके तीन सिर, चार हाथ और आठ पैर हैं तो आप कितने क्रोधित होंगे?
आप क्रोधित होंगे या नहीं जब कोई आपकी नाशवान इंसान के रूप में झूठी छवि और प्रतिमा बनाता है...

* जिसका आरंभ और अंत न हो
* जन्म और मृत्यु के बिना...
* किसी ने कभी नहीं देखा है - जो दिखाई नहीं देता - सर्वशक्तिमान भगवान

क्या यह भगवान पर झूठी मूर्ति या छवि बनाकर " अक्षम्य पाप" नहीं है?

क्या एक चित्र (मूर्ति) आपको केंद्रित कर सकता है?

सवाल: कहा जाता है कि भगवान की छवि को "विचारों को एकत्र करने के लिए - पूजा में, ध्यान में" बनाया गया था!

जवाब: हजारों सालों से मुस्लिम लोग इसे गलत साबित कर रहे हैं, अपने अमली कर्मों से दिखा रहे हैं।

200 करोड़ मुसलमान उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक एक छोर से दूसरे छोर तक बिना किसी मूर्ति या छवि के पूजा करते हैं! वे भी आध्यात्मिक ध्यान में हैं! तो यह झूठ है कि मन तभी एक रहेगा जब आपके सामने कोई तस्वीर या मूर्ति होगी।

जहाज समुंदर के बीच में सैर कर रहा है। एक तूफ़ान आ रहा है। ऐसा लगता है कि यहाँ पर एक भयानक स्थिति है जहाँ हर कोई डूबकर मर जाएगा। जहाज में कोई छवि, कोई मूर्ति नहीं है। वे क्या करेंगे? क्या वे जो मूर्ति और छवि की पूजा करते हैं, वे छवि के बिना मन की एकता के साथ प्रार्थना नहीं करेंगे? क्या वे खतरे को सुनेंगे नहीं?

कई देशों के इतिहास-पुराणों पर नजर डालें तो भी यही कहा जाता है कि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि बिना मूर्ति के अकेले बैठकर प्रार्थना-ध्यान

करते थे?
इसलिए, यह गलत है कि केवल एक छवि या मूर्ति होने पर ही मन एकत्र होकर भगवान की पूजा में शामिल होगा।

क्या मूर्तियों में शक्ति होती है?

सवाल: कुछ लोग मानते हैं कि मूर्तियाँ शक्तिशाली होती हैं?

जवाब: लेकिन वाकई में नहीं। उनके अपने अखबारों में खबर है कि मूर्तियां चोरों द्वारा चुरा ली जाती हैं और विदेशों में बेच दी जाती हैं।

*तावथिरु ब्रह्मानंद स्वामी (१८५२ - १९२९), एक भारतीय हिंदू सिद्ध अपने पुस्तक "मूर्ति पूजा की निन्दा" में मूर्तियों की शक्तिहीनता की बात करते हैं। "मूर्तियों में कोई ताक़त नहीं होती।"

* हमने चोरों को कुछ प्रसिद्ध मंदिरों में सेंध लगाते और अकूत धन चुराते देखा है। हम ऐसी कहानियों के बारे में भी जानते हैं कि कुछ मंदिरों में मूर्तियों और छवियों को अपवित्र किया गया और उन्हें उल्टा स्थापित किया गया (अन्य धार्मिक लोगों द्वारा)।

* यहां तक कि एक चींटी या मच्छर भी उन पर हमला करने पर विरोध कर सकता है लेकिन ये मूर्तियां नहीं।

* यदि मूर्तियाँ वास्तव में शक्तिशाली हैं, तो चोरों द्वारा उन्हें चुराने के लिए मंदिर में प्रवेश करने से पहले, क्या उन्हें रक्षकों, पुजारियों, धर्मकाठों, भक्तों, पुलिसकर्मियों आदि को चेतावनी नहीं देनी चाहिए थी कि "चोर आ रहे हैं"?

* क्या ऐसा हो सकता है कि इतनी चेतावनी के बावजूद जब चोर मूर्ति चुराकर भागे तो क्या चोरों के हाथ-पैर अकड़ नहीं जाने चाहिए थे और वे आगे नहीं भाग सके?

* यदि (अगली सुबह) जनता चोरों को इस तरह खड़े (फंसे हुए) रूप में देखती है, तो उन महान पापियों को, जिनमें कोई धर्मपरायणता नहीं है, धर्मपरायणता हो सकती है! उन चोरों की भी उच्च भक्ति हो सकती थी और वे सही रास्ते पर आ सकते थे!

यदि मूर्तियाँ शक्तिशाली हैं तो उन्हें चोरों पर प्रभाव डालना चाहिए था कि उनके मन में चोरी करने का विचार न आये!

कई सैनिकों ने मंदिरों में मूर्तियाँ तोड़ दीं और आभूषण लूट ले गये। तब ये मूर्तियाँ चुप क्यों थीं?

यदि उन मूर्तियों में थोड़ी सी भी शक्ति है, तो क्या वे कम से कम अपने-अपने अवसरों पर अपनी शक्ति दिखा सकती हैं?

क्या ये शक्तिहीन मूर्तियाँ हमें सुरक्षित रखेंगी? हमारी बीमारियों का इलाज करेंगी? संतान वृद्धि (वंशवाद) देंगी? धन देंगी?

वसिष्ठ मामुनि कहते थे; जो लोग मूर्तियों की पूजा करते हैं और बलिदान, उपवास, दान और नृत्य करते हैं वे जानवर हैं!

तो हमारे लिए यह स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म के ऋषिमुनि भी मूर्ति पूजा का विरोध करते थे।

ओल्ड टेस्टामेंट, बाइबिल का पहला भाग जिसे ईसाई पढ़ते हैं, मूर्तिपूजा के विरोध का इतिहास है। उनमें से कुछ का तो मूर्तियाँ तोड़ने का भी इतिहास है। पुस्तक यह भी सिद्ध करती है कि मूर्तियों में कोई शक्ति नहीं होती।

क्या प्राकृतिक शक्तियाँ भगवान होती हैं?

सवाल: कुछ लोग सूरज, हवा, आग, चाँद, तारे आदि की पूजा करते हैं, दावा करते हैं कि ये हमारे लिए आश्चर्यजनक शक्तियाँ हैं? क्या यह सही है?

जवाब: चाहे सभी शक्तियाँ या चमत्कार हों, लेकिन इनमें भी विनाश होता है। यानी, इन पर नियंत्रण में आने की प्रवृत्ति होती है।

*रात के समय सूरज का पूरा नियंत्रण नहीं होता। खगोलज्ञ कहते हैं कि एक दिन सूरज खुद ही धूल में बिखर जाएगा।

* चाँद और तारे भी नष्ट होने वाले हैं, विज्ञान आज कहता है।

*हवा और आग को एक दर्जे तक नियंत्रित किया जा सकता है। कुछ समय और स्थान होते हैं जहाँ हवा या आग ही नहीं होती (आकाशगंगा की खाली जगह)।

* इसलिए, भले ही ये सभी शक्तिशाली हैं, वे नश्वर हैं और नियंत्रण के अधीन हैं, इसलिए वे शक्तिशाली भगवान नहीं बन सकते जिनकी हमें

पूजा करनी चाहिए।

* यदि आप हर उस चीज़ की भगवान के रूप में प्रार्थना या पूजा करना शुरू कर दें जो आपको आश्चर्यचकित करती है, तो लाखों-करोड़ों भगवान प्रकट हो जायेंगे। हिंदू धर्म में कहा जाता है कि तीन सौ तीस करोड़ (तैंतीस करोड़) भगवान हैं। अगर मैं इसे लिखूं तो मुझे इसमें आश्चर्य नजर आएगा. 330,000,000, वह संख्या है जिसे लिखकर कोई भी आश्चर्यचकित हो सकता है।

* क्या वे इन प्राकृतिक शक्तियों - विशेषकर निराकार शक्तियों की प्रार्थना या पूजा करते हैं - उन्हें निराकार मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं? नहीं बिलकुल नहीं। वे एक मूर्ति या चित्र भी बनाते हैं और उसका जश्न मनाते हैं और प्रार्थना करते हैं। इससे मूर्तियों की संख्या भी लाखों (करोड़ों) बढ़ जाती है। हर मूर्ति के बारे में एक-एक कहानी बुनी गई है - मानव मस्तिष्क की क्षमता से परे अरबों कहानियाँ रची गईं।
* उदाहरण के लिए, हिंदू धर्मग्रंथों में प्रमुख भगवानों के रूप में केवल तीन का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। लेकिन फिर शक्तियों को भगवान बना दिया गया। उसके बाद जानवरों, पेड़ों, पक्षियों और नदियों सभी को भगवान और मूर्तियाँ बना दिया गया।

* इस तरह से उत्पन्न हुई मूर्तिपूजा और बहुदेववाद की अज्ञानतापूर्ण अवधारणाओं को दूर करने का ज्ञान पवित्र कुरान में बताया गया है। इब्राहीम के इतिहास के बारे में पवित्र कुरान की आयत यही कहती है।
* तथा जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहाः क्या आप मुर्तियों को पूज्य बनाते हो? मैं आपको तथा आपकी जाति को खुले कुपथ में देख रहा हूँ।... (क़ुरान 6:74)

* और इब्राहीम को इसी प्रकार हम आकाशों तथा धरती के राज्य की व्यवस्था दिखाते रहे और ताकि वह विश्वासियों में हो जाये।...
(क़ुरान 6:75)

* तो जब उसपर रात छा गयी, तो उसने एक तारा देखा। कहाः ये मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया, तो कहाः मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता।... (क़ुरान 6:76)

* फिर जब उसने चाँद को चमकते देखा, तो कहाः ये मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया, तो कहाः यदि मुझे मेरे पालनहार ने मार्गदर्शन नहीं दिया, तो मैं अवश्य कुपथों में से हो जाऊँगा।...
(क़ुरान 6:77)

* फिर जब (प्रातः) सूर्य को चमकते देखा, तो कहाः ये मेरा पालनहार है। ये सबसे बड़ा है। फिर जब वह भी डूब गया, तो उसने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! निःसंदेह मैं उससे विरक्त हूँ, जिसे तुम (अल्लाह का) साझी बनाते हो।... (Quran 6:78)

* मैंने तो अपना मुख एकाग्र होकर, उसकी ओर कर लिया है, जिसने आकाशों तथा धरती की रचना की है और मैं बहुदेववादीयों में से नहीं[हूँ।... (क़ुरान 6:79)

* जो लोग उदारतापूर्वक अनेक भगवानों को अपनाते हैं और सभी (प्राकृतिक) शक्तियों की पूजा करते हैं, वे उन लोगों से किस प्रकार श्रेष्ठ हैं जो केवल एक भगवान की पूजा करते हैं?

* क्या इस दार्शनिक तर्क से यह सिद्ध किया जा सकता है कि " भगवान एक नहीं, बल्कि अनेक भगवान हैं"?

* क्या सूर्य, अग्नि, वायु आदि अपनी पूजा करने वाले को कोई विशेष

प्रकाश, गर्मी, कोमलता देते हैं? क्या कई लोगों द्वारा भगवानों के रूप में पूजे जाने वाले गाय जैसे जानवरों को विशेष विशेषाधिकार दिया गया है? नहीं!

* इसलिए जो लोग एक भगवान के समानांतर कई भगवानों की पूजा करते हैं, वे अपनी सुरक्षा के लिए एक कमजोर भगवान की ओर भागते हैं। पवित्र कुरान इसे एक उदाहरण के साथ खूबसूरती से समझाता है।

* उनका उदाहरण जिन्होंने बना लिए अल्लाह को छोड़कर संरक्षक, मकड़ी जैसा है, जिसने एक घर बनाया और वास्तव में, घरों में सबसे अधिक निर्बल घर मकड़ी का है, यदि वे जानते।... (क़ुरान 29:41)
इसलिए संसार की शक्तियों (सूर्य, चंद्रमा, अग्नि आदि) की अनेक भगवानों के समान पूजा करना एक दिन अंततः व्यर्थ सिद्ध होगा।

क्या भगवान हमारे भीतर है?

क्या हम भगवान हैं?

सवाल: कुछ लोग यह मानते हैं, कहते हैं "मैं हूँ भगवान - अहं ब्रह्म" या "भगवान हमारे अंदर हैं"। सभी भगवान के रूप में हैं, यानी घटक (-भाग) हैं। क्या यह सही है?

जवाब: नहीं, "हम भगवान के हैं। हम भगवान की शक्ति से बंधे हुए हैं" यह बेहतर और सही बयान है।

उदाहरण: कुछ लोग कहते हैं कि "हमारे भीतर भगवान " की अवधारणा इस विचार के आधार पर गढ़ी गई थी कि जीवन की सांस भगवान से (पहले मनुष्य) आदम और फिर पीढ़ियों के माध्यम से आई।

उदाहरण: पहले के समय के राजा विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में अहंकारवश स्वयं को भगवान घोषित करते थे।

उदाहरण: फिरौन - मिस्र के राजा

उदाहरण: नमरूद - मध्य एशिया के राजा

उदाहरण: इरान्यान - भारत के राजा

उदाहरण: सूची जारी है. लेकिन जब ये सभी लोग मर जाते हैं या मारे जाते हैं, तो वे यह नहीं कहते कि "भगवान मर गया" या "भगवान मारा गया।" जो मर जाता है या जिसकी हत्या कर दी जाती है, क्या वह भगवान हो सकता है? सवाल उठता है.

यह विचार सही है कि हम भगवान के हैं और हम भगवान की शक्ति से बंधे हुए हैं।

उदाहरण: भगवान ने स्वयं हमें बनाया; वह हमारी रक्षा कर रहा है; भगवान स्वयं हमें नष्ट कर देता है; वे विश्वासी जो स्वीकार करते हैं कि न्याय के दिन केवल भगवान ही दंड देगा और पुरस्कार देगा। सच्चा कथन यह है कि " भगवान सृष्टिकर्ता है और हम उसकी रचनाएँ हैं।"

हम वह (भगवान) नहीं हैंI

हम उसके हैंI

स्पष्टीकरण: यह दावा करना कि भगवान हमारे भीतर है, एक अव्यवहारिक तर्क है, जो भगवान के व्याकरण के विपरीत है - और यह कहना कि हम भगवान हैं।

उदाहरण: कोई भी मनुष्य निम्नलिखित व्याकरण का उल्लंघन करके कार्य नहीं कर सकता है, - जन्म, मासूमियत, - बचपन - अंगों का विकास, - विश्राम, - अंगों का आकार, - निक्षेपण की विधि, - वासना-

संबंधी संतानों का प्रजनन, - उम्र बढ़ना, - बुढ़ापा, और - मृत्यु.

उदाहरण: अत: यह सोचना असंभव है कि उपरोक्त व्याकरण के अधीन मनुष्य ने भगवान को अपने भीतर समाहित कर लिया है। भगवान होने का दिखावा करना संभव नहीं है.

क्या हम यह मान सकते हैं कि भगवान मनुष्य से दूर कहीं है? इस्लाम एक खूबसूरत तरीके से जवाब देता है।

कुरान 2:186: ... (हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आपसे प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ।...

कुरान 50:16: ... हम अधिक समीप हैं उससे (उसकी) प्राणनाड़ी[से।...

कुरान 56:85: तथा हम अधिक समीप होते हैं उसके तुमसे, परन्तु तुम नहीं देख सकते।…

यह तथ्य कितना सुन्दर है कि "मैं भगवान हूँ" या "भगवान हमारे अंदर हैं के बजाय भगवान हमारे निकट है?

क्या अवतार भगवान हैं?

सवाल: ऐसा कहा जाता है कि भगवान ने मानव रूप धारण किया। अवतार की इस अवधारणा का उत्तर क्या है?

जवाब: यह कहना कि भगवान पृथ्वी पर प्रकट हुए और अच्छे लोगों की रक्षा की और शक्तिशाली लोगों को नष्ट कर दिया, भगवान की शक्ति को कम आंकना है।

* वह मानव रूप धारण किये बिना भी ऐसा कर सकता है। या फिर भगवान पृथ्वी पर कुछ लोगों को बुरे लोगों से अधिक शक्ति दे सकता है और उन्हें नष्ट कर सकता है। उपरोक्त कार्य करने के लिए उसे पृथ्वी पर क्यों आना चाहिए?

* इसके अलावा, पृथ्वी पर आने के लिए मनुष्य का रूप धारण करने के लिए भगवान को एक महिला के गर्भ से जन्म लेना चाहिए जो इस सिद्धांत के खिलाफ है कि भगवान जन्म और मृत्यु के बिना हैं।

* जब वह एक इंसान के रूप में आए, तो उन्हें बचपन, यौवन, वासना और बच्चे पैदा करने की एक ऐसी कहानी बुननी पड़ी जो देवत्व का

अपमान करती। क्या भगवान ऐसा कर सकते हैं? नास्तिक ही नहीं आस्तिक भी सवाल पूछने लगते हैं.

* पुराणों में भगवान का अवतारवाद

* राम छिपकर बाली को मार देते हैं।

* कृष्ण धर्म की सुरक्षा के लिए अधर्म करते हैं।

* यीशु, जो प्यार सिखाने के लिए आए थे, चर्च में चाबुक लेते हैं और मारते हैं।

हालाँकि इन कार्यों के लिए हजारों कारण और स्पष्टीकरण दिए गए हैं, "क्या ईश्वर ऐसा कर सकता है?" सवाल बना हुआ है.

* भगवान का कोई जन्म नहीं होता; कोई मृत्यु नहीं; यदि हम इस तथ्य को स्वीकार कर लें कि वे मनुष्य के रूप में अवतरित नहीं होते - तो हम देख सकते हैं कि भगवान इन आलोचनाओं से दूर ही रहें तो बेहतर है। इस्लाम इस पर जोर देता है.
भगवान अवतार नहीं लेते. इसके बजाय वह अपने दूतों को मनुष्यों में से चुनता है। वह अच्छे की रक्षा करने और बुरे का विरोध करने का आदेश देता है। ये कितना सुंदर सत्य है.

इसलिए यह सच नहीं है कि भगवान ने धरती पर आने के लिए मानव अवतार लिया। न ही यह शुद्ध धर्मपरायणता के लिए उपयुक्त है।

क्या महिला भगवान को स्वीकार किया जा सकता है?

सवाल: जो लोग पुरुष भगवानों की पूजा करते हैं वे महिला भगवानों की भी पूजा करते हैं, क्या यह सही है?

जवाब: कुछ लोग महिला भगवान को पुरुष भगवान से अधिक शक्तिशाली बनाते हैं। फिर भी अन्य लोग एक महिला भगवान को पुरुष भगवान की पत्नी और समान शक्ति के रूप में बनाते हैं और कुछ लोग महिलाओं को पुरुष भगवान की बेटियों के रूप में बनाते हैं। इसके नतीजे पर बारीकी से नजर रखनी चाहिए.

* यह देखा जा सकता है कि पुष्टिकरण के लिए बहुत सारी कहानियाँ और कल्पनाएँ जोड़ी गई हैं और जिसके परिणाम ने शुद्ध देवत्व को नष्ट कर दिया है।

* हिंदू धर्म में कुछ लोग ब्रह्मांड के निर्माता के रूप में आदिपराशक्ति की कहानी बनाते हैं।

अगर कोई महिला शक्ति नहीं होती, तो शिव कार्य करने में असमर्थ रहते।

बाइबल में, मेरी की कहानियाँ बनाई जाती हैं, जिन्होंने कोई चमत्कार नहीं किए - केवल ईसा मसीह को जन्म दिया (भगवान की इच्छा के अनुसार) - भगवान की मां के रूप में।

नबी के समय अरब में भी कहानी बनाई गई कि शक्तिशाली देवी भगवान की महिला पुत्रियां थीं। उनकी प्रतिमाएँ भी मक्का में रखी गईं थीं।

*यदि हम इन देवियों और लड़कियों के निर्माताओं से पूछें;

*क्या एक महिला पूरी तरह से प्राथमिक शक्ति के रूप में काम कर सकती है? क्या वे अपने आप में अपने जीवन में भी पूर्ण प्राथमिक शक्ति हो सकती हैं?

* चाहे कुछ भी हो - आप उन्हें कई बार यह स्वीकार करते हुए देख सकते हैं कि मैं एक लड़की हूं (उनके दैनिक मामलों में असमर्थता और कमजोरियां हैं)। सच तो यह है कि वे पुरुष प्रभुत्व या सहायता के बिना काम नहीं कर सकतीं।

* कहानी उन लोगों के बारे में भी काल्पनिक होनी चाहिए जिन्होंने महिलाओं को देवी बना दिया - यौवन की अवधि - सेक्स - विवाह - बच्चे। यह यौन अंगों के बारे में भी कहा जाना चाहिए। वे कल्पनाएँ देवत्व के उत्कर्ष को नीचे गिरा देती हैं। पवित्र कुरान इन देवताओं के बारे में क्या कहता है?

* और उन्होंने उसके अतिरिक्त अनेक पूज्य बना लिए हैं, जो किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते और वे स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं और न वे अधिकार रखते हैं अपने लिए किसी हानि का, न अधिकार रखते

हैं किसी लाभ का, न अधिकार रखते हैं मरण और न जीवन और न पुनः[जीवित करने का। … (क़ुरआन 25:3)

*... और बिना ज्ञान के उसके लिए पुत्र तथा पुत्रियाँ घड़ लीं। वह पवित्र तथा उच्च है, उन बातों से, जो वे लोग कह रहे हैं।… (क़ुरआन 6:100)

* व्यवहारिक जीवन में इन्हें लड़कियां रखना पसंद नहीं है। चेहरा विकृत हो जाता है. लेकिन पवित्र कुरान इस बात को खारिज करता है कि ये महिलाएं सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण देवता हैं - ईश्वर की बेटियां।

* वह अल्लाह के लिए उसे[बनाते हैं, जिसे स्वयं अप्रिय समझते हैं [अर्थात्, बेटियाँ]।... (क़ुरआन 16:62)

* तो (हे नबी!) आप उनसे प्रश्न करें कि क्या आपके पालनहार के लिए तो पुत्रियाँ हों और उनके लिए पुत्र? अथवा किया हमने पैदा किया है फ़रिश्तों को नारियाँ और वे उस समय उपस्थित[थे? सावधान! वास्तव में, वे अपने मन से बनाकर ये बात कह रहे हैं। कि अल्लाह ने संतान बनाई है और निश्चय ये मिथ्या भाषी हैं।… (क़ुरआन 37:149-152)
* इसलिए, इस्लाम इस विचार को स्वीकार नहीं करता है कि महिला प्रथम भगवान है, वह महिला भगवान की पत्नी है, वह महिला भगवान की माँ (देवमाता) है या भगवान ने कन्याओं को जन्म दिया है। इसके विपरीत, यह एक ऐसी राय है जो तर्कसंगत तर्कों के सामने टूट कर बिखर जाती है।

ज्ञान 1

वे जो भगवान में विश्वास रखते हैं

प्रिय पाठक
क्या आप भगवान में विश्वास रखते हैं? यदि हां, तो भगवान आपका भला करें! अगला सवाल - क्या आप एक भगवान में विश्वास करते हैं? क्या आप मानते हैं कि कई भगवान हैं? - यदि आप मानते हैं कि कई भगवान हैं, तो कुछ सवाल उठते हैं।

क्या आपने कभी किसी नास्तिक (या ईश्वर को नकारने वाले) से यह दावा करते हुए बहस की है कि भगवान का अस्तित्व है? या अज्ञानी लोगों और बच्चों को भगवान के बारे में सच्चाई बताई?

उस चर्चा में आप इस संसार सहित ब्रह्मांडीय माध्यमों की गति के बारे में बताएंगे - बिना सहारे के घूमने वाले क्षेत्रों के बारे में, नियमित रूप से से आने वाले मौसमों के बारे में, इससे उत्पन्न होने वाली विश्व समृद्धि के बारे में, उनमें सुंदर और व्यवस्थित नहरों के बारे में, जीवनदायी जल की एक बूँद से माँ के गर्भ में बच्चे के जन्म के चमत्कार के बारे में ।

आप नास्तिक से दुनिया के विचित्र आश्चर्यों के बारे में क्या सवाल पूछते हैं? भगवान में अपने विश्वास की पुष्टि के लिए आप किस प्रकार के सवाल पूछते हैं?

क्या अब आपको एहसास हुआ कि कोई ऐसी शक्ति है जो इन सभी चमत्कारों को नियंत्रित करती है? क्या आप ऐसे ही पूछते हैं? सही?

इसलिए भगवान में विश्वास "एक" (एक भगवान) के साथ शुरू होता है। लेकिन कुछ लोग सोचते हैं कि कई भगवान हैं; पूजे जाते हैं. क्या यह एक भगवान के प्रारंभिक तर्क से भिन्न नहीं है, और जो सत्य माना जाता है उसका खंडन नहीं करता है?

यदि एक भगवान के अतिरिक्त दो भगवान हों तो संघर्ष-क्लेश-झगड़ा होगा। कई देव कहानियाँ देखें। यह ऐसा होगा जैसे दो भगवान आपस में लड़ रहे हों।

एक और सच्चा सिद्धांत कि केवल "एक भगवान" है, यह है कि भक्त उस भगवान की स्तुति और पूजा करते हैं जिसकी वे पूजा करते हैं, इसलिए जिसकी हम पूजा कर सकते हैं वह हमसे उच्च और शुद्ध होना चाहिए। इसलिए जिस भगवान की हम पूजा करते हैं वह हमारे जैसे माता-पिता की सनक - इच्छा - से पैदा नहीं हो सकता। भगवान को हमसे अधिक पवित्र और उच्च होना चाहिए, किसी की भी इच्छा से जन्मा और अजन्मा नहीं होना चाहिए।

अनेक भगवानों का सिद्धांत हमें भगवान के लिए पत्नी, माता, पिता और बच्चों की कल्पना करने के लिए प्रेरित करता है। यह बहुदेववाद सर्वोच्च और सबसे पवित्र भगवान को सबसे निचले और सबसे घृणित और घृणित मनुष्य के स्तर तक गिरा देता है।

तुम जो पवित्र हो, बहुत सी बातों में भगवान की स्तुति करते हो। विशेष रूप से अपनी आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करते हो। इंसान की ज़रूरतों में से एक है पत्नी की गुणवत्ता और उससे मिलने वाला शारीरिक सुख।

क्या हम जिस भगवान की पूजा करते हैं वह एक पुरुष-आवश्यक पत्नी और वासना का प्रेमी होगा? ऐसा सोचना पाप है!

इसलिए, भगवान को ऐसा होना चाहिए जो पत्नी और शारीरिक सुख नहीं चाहता, बिना किसी आवश्यकता के होना चाहिए, और उस आवश्यकता से परे बहुत पवित्र होना चाहिए।

यह विश्वास करना कि भगवान की पत्नी और बच्चे हैं, मानव होने और भगवान का अनादर करने के समान है। पत्नियों और बच्चों वाले देवताओं की कहानियों पर करीब से नज़र डालें। टिप्पणियाँ सामान्य मानव परिवारों की तरह लड़ाई-झगड़े वाली होती हैं। क्या यह भी भगवान का अपमान नहीं है? इस पर कुछ विचार करें!

तो अब आप इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि हमें जिस भगवान की पूजा करनी चाहिए वह ऐसा होना चाहिए जिसमें ऊपर बताए गए अवगुण न हों और साथ ही केवल गुण ही हों।

प्रिय पाठक! क्या दुनिया में कोई ऐसा धर्म है जो भगवान की बात करता है जैसा कि आप अब समझ चुके हैं?

* भगवान एक है!
* भगवान का जन्म किसी से नहीं हुआ. किसी को जन्म नहीं दिया.
* भगवान आवश्यकता रहित है।
* भगवान की कोई पत्नी, पुत्र या पुत्री नहीं है।
* वह बहुत ही पवित्र है।
* संपूर्ण विश्व में उपरोक्त गुण बताने वाला एकमात्र धर्म है।

वह इस्लाम है!

इस्लाम का भगवान - शुद्ध भगवान "अल्लाह"!

अल्लाह शब्द कोई अलग ईश्वर नहीं है जो केवल अरब देशों और मुसलमानों के लिए है। अरबी शब्द "अल्लाह" का अर्थ है (केवल) पूरे ब्रह्मांड के लिए भगवान "मैं तुम्हारा भगवान हूं मेरी पूजा करो" वह पवित्र कुरान में कहता है।

* तो अल्लाह आपका भगवान है।

प्रिय पाठक! सच्चाई को जानने में इतना समय लग गया है, अब क्या करना है? हिचकिचाएं नहीं। सच्चाई को सत्य के रूप में स्वीकार करने के लिए कोई समय सीमा नहीं है।

प्रिय पाठक! आप एक बटेर होकर इस दिन तक एक कौवे के घर में पले हैं। "आज केवल एक ही भगवान है" का एक बुद्धिमत्ता की पर्वाह उत्पन्न हुआ है। अपनी पंखों को फैलाएं और उस ज्ञान के आकाश में उड़ें जो आपका है।

हम अल्लाह, वह एक ही भगवान के नाम में वादा करते हैं।
मैं एकमात्र ईश्वर की पूजा करूंगा "इस इस्लामी ज्ञान को प्राप्त करने के दिन से, अल्लाह की कृपा से जीवन एक विशिष्ट आयाम लेगा।

ज्ञान 2

आपका भगवान कैसा है?

भगवान में विश्वास रखने वाले पाठक!

बहुत से लोग भगवान को मानते हैं लेकिन चाहते हैं कि वह भगवान केवल उनका हो।
और कुछ लोग सोचते हैं कि उनका भगवान केवल किसी विशेष देश और किसी विशेष जाति का है। प्रिय पाठक! क्या आप इससे सहमत हैं?
आप सहमत नहीं होंगे क्योंकि भगवान इस प्रकार की संकीर्ण भेदभाव के परे हैं।
भगवान अपनी रचना, मानव जाति को देश, नस्ल और जाति के आधार पर अलग नहीं करते है। वह उदासीनता या नफरत नहीं दिखाते।
भगवान का प्रेम सभी के लिए है। लेकिन उनका विशेष प्रेम किससे है?, यह उनसे है जो भगवान को महसूस करते हैं और उनमें विश्वास रखते हैं।

इसलिए विश्वास ही सच्चे भगवान का माप है। कोई भी राष्ट्र, कोई भी नस्ल, कोई भी जाति यह दावा नहीं कर सकती कि यह आस्था पूरी तरह से हमारी है।, कोई भी जाति यह दावा नहीं कर सकती कि यह

आस्था पूर्णतः हमारी है।
अमीर लोगों के पास घर, मवेशी और धन आदि हो सकते हैं, क्योंकि ऐसे कब्जे के कारण भगवान में विश्वास को उनकी संपत्ति नहीं कहा जा सकता है। लेकिन एक गरीब आदमी जिसके पास कोई संपत्ति नहीं है लेकिन भगवान में सच्चा विश्वास है, वह "विश्वास में प्रथम" हो सकता है।
कुछ धर्मों में "हम भगवान द्वारा चुने गए लोग हैं" और दावा करते हैं कि जिस भूमि पर हम रहते हैं वह पवित्र भूमि है।
कुछ धर्मों में धनवानों को अधिक दान देने के कारण पूजा में प्राथमिकता दी जाती है।
क्या आपको लगता है कि भगवान को देश, नस्ल और जाति के संकुचित समूह तक सीमित रखना गलत है?

क्या आप अमीर होने के कारण भगवान के सामने विशेषाधिकार प्राप्त नहीं करना चाहते हैं, है ना?
क्या कोई धर्म है जो एक विशेष देश, विशेष नस्ल, विशेष जाति की सीमा में नहीं रहता है, पूरी दुनिया के लिए है?

भगवान सभी राष्ट्रों के हैं
सभी जातियों और भाषाओं के लिए है।
जातिगत भेदभाव नहीं देखना चाहिए. संसार के सभी मनुष्य एक ही माता-पिता से उत्पन्न भाई-भाई हैं!
न तो पैसा बड़ा माना जाना चाहिए और न ही सामाजिक स्थिति को महत्व देना चाहिए। विश्वास ही एकमात्र मानक है। इसलाम ही एकमात्र धर्म है जो इसका ऐलान करता है!
अगर आपको इस्लाम की ये अच्छी खबरें पसंद आईं तो पवित्र कुरान पढ़ें जो इस्लाम की पवित्र किताब है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) की बातें पढ़ें।
दुनिया के लोग
आदम नाम के पहले आदमी की संतान!
इस्लाम दुनिया के लोगों को यही कहता है और खुशखबरी सुनाता है।
मस्जिदों में या मक्का के पवित्र स्थान में अमीरों के लिए कोई अग्रिम पंक्ति (आरक्षित)नहीं है।
यदि आपको इस्लाम में ऐसी स्पष्टता पसंद आई, तो आएं और और जानें।
अच्छे ज्ञान - अच्छी बातें सीखने से संकोच न करें। ज्ञान को नहीं जानने की अनिच्छा ज्ञानहीनता की ओर ले जाती है।

प्रिय पाठक

तुम मधुमक्खी की तरह हो! आपका कर्तव्य शहद की ओर उड़ना है।
इस्लाम ज्ञान से भरपूर फूलों से भरा हुआ है। आओ उड़ो! आओ और ज्ञान सीखो!

ज्ञान 3

क्या भगवान को प्रसाद की आवश्यकता है?

भगवान में विश्वास रखने वाले पाठक!

भगवान का विश्वासी होने के कारण भगवान निश्चित रूप से आप पर कृपा बरसाएगा

लेकिन आइए विचार करें कि हमारा विश्वास कैसा रहा है।

क्या आपको लगता है कि कुछ फल, फूल, खाद्य पदार्थ और सोने के सिक्के भगवान के सामने पेश करने से हम पर भगवान के उपकारों का आभार होगा?

यदि मनुष्य अपनी माँ के उपकारों का बदला अपने हाथों से देने में असमर्थ है, तो वह अपने परमेश्वर के उपकारों का बदला अपने हाथों से कैसे चुका सकता है?

माँ के लिए बच्चे की मुस्कान ही काफी है!

जब एक बच्चा उसे माँ, माँ कहता है, तो वह उसे काफी हो जाता है।

भगवान अपने भक्त से कोई प्रसाद नहीं चाहते। भक्त का भगवान के विचारों में संलग्न होना - भगवान के प्रति सदैव स्तुति और कृतज्ञता ही भगवान चाहते हैं।

यदि लोगों के मन में यह विचार आये तो उन्हें इस तथ्य को समझना चाहिए कि भगवान बिना किसी आवश्यकता के है। जो यह नहीं कहता कि 'मुझे आहुति दो' उसे भी भगवान की महानता समझनी चाहिए।

क्या दुनिया में ऐसा कोई पंथ या धर्म है जो कहता है कि भगवान न माँगने वाला है: वह अपने लिए प्रसाद के रूप में आपसे कुछ भी प्राप्त नहीं करना चाहता है? और वह इस्लाम है।

मुसलमानों को हर दिन मस्जिदों में जाते हुए देखो। वे प्रसाद के रूप में कुछ भी अर्पण नहीं करते।

वे शरीर को साफ करते हैं जिसे "प्रक्षालन" कहा जाता है। इसका दर्शन यह है कि हमें उस भगवान के सामने खड़े होकर प्रार्थना करनी चाहिए जो शुद्ध (पवित्र) हैं

प्रार्थना के समय मन और शरीर शुद्ध होना चाहिए और प्रार्थना के दौरान भगवान को कोई अन्य प्रसाद नहीं चढ़ाना चाहिए।

प्रिय पाठक!
आपके मन में एक सवाल उठ सकता है. यदि भगवान को प्रसाद नहीं चाहिए, यदि भगवान की कृपा से किसी की आय बढ़ती है - तो क्या इस्लाम हमें स्वयं इसका स्वाद चखने और आनंद लेने की अनुमति देता है?

इस्लाम कहता है, "भगवान की कृपा से जो धन तुम्हें मिला है उसे अपने आस-पास के गरीबों में भी बांटो।"
इस्लाम निर्देश देता है, "आप देने से शुद्ध होते हैं।" इस प्रकार के दान को जकात कहा जाता है। ज़कात शब्द का अर्थ पवित्रता है!
* अपनी इच्छानुसार दान देना वर्जित है।
*इस्लाम गरीबों, जरूरतमंदों और नेक रास्ते पर खर्च करने का हुक्म देता है

प्रिय पाठक!
इन संदेशों में आपको जो मुख्य बात नोटिस करनी चाहिए वह यह है कि इस्लाम का भगवान बिना किसी आवश्यकता के है; दान देनेवाला; वह जो स्वयं को अर्पित नहीं करना चाहता। लेकिन, साथ ही, वह आदेश देते हैं कि उनके भक्तों को वह धन दूसरों को देना चाहिए जिसका उन्होंने आशीर्वाद दिया है।

प्रिय पाठक! तुम आज तक ऐसे ही परमेश्वर की तलाश में थे! सही है?

*देखो - तुम्हारा भगवान
*देखो - तुम्हारा धर्म

कभी भी ऐसा मत सोचो कि "भगवान केवल मुसलमानों का है और धर्म केवल उनका है।"
प्रिय पाठक, अल्लाह आपके लिए, आपके परिवार के लिए और दुनिया के सभी लोगों के लिए भगवान है! उसका धर्म इस्लाम है!

ज्ञान 4

पुराने धर्म को छोड़ना चाहते हैं?

हे पवित्र लोगों!

आपको संदेह हो सकता है. यदि मैं "एक भगवान" के सिद्धांत को स्वीकार करता हूँ तो क्या मुझे अपना पुराना धर्म छोड़ना होगा? यही संदेह है!
यदि आप गौर करें तो आपके पुराने धर्म में भी एक ही भगवान दर्शन था।
हिंदू धर्म एक भगवान पर आधारित है जिसे परब्रह्म कहा जाता है। तमिल सिद्धों में सबसे प्राचीन थिरुमूलर ने कहा है कि "हमारा कबीला एक है, हमारा भगवान एक है" इसलिए पुराना दैवीय सिद्धांत एक भगवान का विरोधाभासी नहीं है।
भरतियार ने अपनी कविता में "अज्ञानी आदमी जो हजारों भगवानों की तलाश में भटकता है" को श्राप दिया है। इस्लाम ऐसी कठोरता नहीं दिखाता. दूसरी ओर, यह कहता है कि "भगवान एक है"।

कई हिंदू धार्मिक संतों ने, आत्मज्ञान परिपक्वता प्राप्त करने के बाद, जंगल, पहाड़ और उपजाऊ जंगल में ध्यान किया और कई भगवानों की पूजा नहीं की और केवल एक भगवान की पूजा की।

कई भगवानों - मूर्तियों, छवियों आदि की पूजा करना रामलिंग आदिगल द्वारा "मंथा ज्ञानम" कहा जाता है। "उच्च ज्ञान" का अर्थ है निराकार भगवान की पूजा करना।
वैष्णवधर्म भी अनेक भगवानों को निंदा करता है, जैसा कि इस कथन में दिख सकता है "वैष्णवधर्म के भक्त कभी भी भूलकर भी मूर्तियों की पूजा नहीं करते।"
यहां तक कि बाइबिल में, पुराने नियम में, ऐसे शब्द हैं जो एक भगवान को संदर्भित करते हैं, ईसाई चर्च की प्रार्थना में यह कविता आती है "हम यीशु मसीह के माध्यम से भगवान से प्रार्थना करते हैं।"
इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि सभी धर्मों में "एक भगवान सिद्धांत" एक गहरी धारा है।

बहुदेववाद का त्याग - एकेश्वरवाद आपके धर्म के विरुद्ध नहीं है।

बीच में मिश्रित "सुस्त ज्ञान" को छोड़ देने और गहरे पानी के प्रवाह को स्वीकार करने में क्या गलत है?

धर्म केवल दिखावे और नारों का विषय नहीं है। विश्वास उसका आधार है। उस विश्वास की पवित्रता एक दिव्य सिद्धांत है।
तिरुवल्लुवर कहा करते थे

जो किसी चीज का अटल होता है, वह उसे पकड़ता है; और इस तरह से पकड़कर, पकड़ना बंद कर देता है।

"उस भगवान की इच्छा करो जिसकी कोई इच्छा नहीं है; उसकी इच्छा करना हमारी इच्छाओं को छोड़ना है"
कई भगवानों की अभिव्यक्ति केवल कहानियों में ही देखी जा सकती है। "अनन्त शरण" इस्लाम कहता है "एक भगवान जिसकी कोई

समानता नहीं है और कोई इच्छा नहीं है।"

पवित्र कुरान यह नहीं कहता कि "एक भगवान " का यह सिद्धांत केवल पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) द्वारा अरब में स्थापित और प्रचारित किया गया था।

पवित्र कुरान में कहा गया है कि दुनिया के हर समुदाय को "एक भगवान " के सिद्धांतों को बताने के लिए एक दूत भेजा गया था। तब भारत में अनेक सन्देशवाहक आये होंगे और उन्होंने कोई दैवीय सिद्धान्त भी फैलाया होगा।
अंततः क्षय-परिगलन प्रकट हो सकता है और बहुदेववाद आ सकता है। पैगंबर मोहम्मद तभी आये जब अरब में ही "एक भगवान " का सिद्धांत ख़त्म हो गया और बहुदेववाद की पूजा की जाने लगी।

काबा के अंदर और बाहर 360 मूर्तियाँ लगाई गई थीं, जिसे अरब में "एक भगवान " की पूजा करने के लिए बनाया गया था
यह वह समय था जब "फीकी बुद्धि" प्रकट हुई थी कि पैगंबर ने "एक भगवान " की पूजा स्थापित करने का प्रयास किया था। धीरे-धीरे अरबों ने मध्यवर्ती मान्यताओं को त्याग दिया और प्रथम-प्रारंभिक-एकेश्वरवादी पूजा को अपना लिया।
इसी तरह, आप बीच में आने वाले बहुदेवतावाद को त्यागने जा रहे हैं और प्रारंभिक विश्वास को ग्रहण कर रहे हैं।

जैसे अनाथ को पूर्वजों का आशीर्वाद मिला...

यह उस व्यक्ति के समान है जिसे गंदे पानी के स्थान पर शुद्ध पानी मिल गया...

यह एक बिना कंघी किए व्यक्ति के लिए बाल सजाने के तरह है...

यह आपके पहले से ही भ्रमित विश्वास में स्पष्टता - दृढ़ता - लाने का एक दिव्य सिद्धांत है।

हम पिछली पीढ़ियों के तरीकों को छोड़ने में अनिच्छुक हो सकते हैं।

क्या हम उस पीढ़ी के पहनावे, स्टाइल और तौर-तरीकों को अब भी वैसा ही रखते हैं? नहीं, हम किसी सच्ची और आरामदायक बात को स्वीकार करने और बाकी को त्यागने में क्यों अनिच्छुक होते हैं?

कौन सा पहले है? यह अनिच्छा भ्रम के कारण है। जब पिछली पीढ़ी और पिछली पीढ़ी के सिद्धांत को "ईश्वरीय सिद्धांत" के रूप में महसूस किया जाता है तो अनिच्छा दूर हो जाती है।

अगली झिझक यह है कि यदि मैं "एक भगवान " को स्वीकार करता हूँ तो क्या मुझे मुसलमानों की तरह पहनावा, रूप, खान-पान सब कुछ बदलने की ज़रूरत है?

ये सब उपर्युक्त हैं! पहली आवश्यकता है "एक भगवान में विश्वास"। अंदर से, हृदय में "एक भगवान " का दृढ़ सिद्धांत है।

तो खोने के लिए कुछ भी नहीं. एक भगवान के सिद्धांत को स्वीकार करने से" अर्थात हानि सर्वथा अंधकारमय है।

क्या हम अंधकार के नष्ट होने का शोक मनाएँ?

* "एक भगवान " का अर्थ है, एक दिव्य सिद्धांत - हल्कापन; ज्ञान की

हवा, सीढ़ी, चढ़ाई, पूरी दुनिया के लिए, सभी भाषाओं के लिए सही रास्ता! सोचना! कार्य करने के लिए तैयार रहें!

(नोट 1)

मुसलमान बनना और मुसलमान कैसे बनें?

हमें क्या जानने की जरूरत है?

निम्नलिखित प्रतिज्ञान कहकर कोई भी व्यक्ति मुसलमान बन सकता है।

अश-हदु अल्लाह इल्लाहा इल्लल्लाहु वह-दहु ला शरी-क लहू व अशदुहु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु.

"मैं गवाही देता / देती हूं कि अल्लाह के अलावा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है, और मुहम्मद (उन पर शांति हो) अल्लाह के दूत (पैगंबर) हैं।"

क्या यह आपके जीवन के उद्देश्य को पूरा करने, सत्य के प्रति समर्पण करने और अपने निर्माता को स्वीकार करने का सही समय नहीं है?

शहादा (विश्वास - प्रतिज्ञा)

इस्लाम का पहला स्तंभ विश्वास करना और व्यक्त करना है

'शाहदा' के माध्यम से विश्वास जिसे 'कालिमा' कहा जाता है।

अश-हदु अल्लाह इल्लाहा इल्लल्लाहु वह-दहु ला शरी-क लहू व अशदुहु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु.

अर्थ: मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है। मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद (उन पर शांति हो) अल्लाह और उसके दूत के सेवक हैं।

पुष्टि: अश-हदु अल्लाह इल्लाहा

प्रतिज्ञा के पहले भाग में सबसे महत्वपूर्ण सत्य शामिल है जो ईश्वर ने मानव समाज को दिया है, कि अल्लाह सर्वशक्तिमान के अलावा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है, जिसका उल्लेख ईश्वर ने कुरान में किया है;

और हमने आपसे पहले जो भी रसूल भेजा, उसकी ओर यही वह्य (प्रकाशना) करते थे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही इबादत करो।… (कुरान 21:25)

इस शहादा (कलीमा) का पाठ करके, एक व्यक्ति यह स्वीकार करता है कि अल्लाह सभी रचनाओं का निर्माता है और वह इस ब्रह्मांड में प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक चीज़ पर सर्वोच्च अधिकार रखता है।

इस माध्यम से, एक मुसलमान यह कहकर अपने दिल और आत्मा को ईश्वर के करीब लाता है कि अल्लाह के अलावा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है, और उस पर निर्भर होकर, उस पर भरोसा करके और

उसके प्रति अपना विश्वास, प्रतिबद्धता और आज्ञाकारिता समर्पित करके।

भगवान के अलावा किसी अन्य (स्वर्गदूतों, पैगम्बर मुहम्मद (स.) सहित दूतों, धार्मिक संतों, मूर्तियों, सूर्य, चंद्रमा, वृक्ष आदि) की पूजा करना इस्लाम के मूल सिद्धांतों के विपरीत है। यह एक अक्षम्य पाप है जब तक कि कोई इसके लिए पहले पश्चाताप न कर ले, उनकी मृत्यु से पहले. सभी प्रकार की पूजा अल्लाह, एक भगवान की ओर होनी चाहिए।

"एक भगवान की अस्वीकृति" न केवल लकड़ी और पत्थर के मानव निर्मित देवी-देवताओं में विश्वास है, बल्कि (इस्लामिक सिद्धांतों के अलावा) अंधविश्वासों में भी विश्वास है, और धार्मिक नेताओं की पूजा करना, प्यार करना और उनका पालन करना और यह सोचना कि उनके पास विशेष अधिकार हैं और पवित्रता.

और इस्लाम ज्योतिष, हस्तरेखा विज्ञान, भाग्य बताने, छिपी हुई चीजों को जानने की कोशिश करने, धार्मिक विद्वानों की कब्रों और स्मारकों पर जाने और उनका आह्वान करने को अस्वीकार करता है। यह केवल आपको सीधे अल्लाह से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता है

भगवान के लिए प्रार्थना, उपवास, याचना, शरण मांगना, पशु बलि जैसी सभी प्रकार की पूजा की जानी चाहिए।

उन गतिविधियों में संलग्न होना जो भगवान को प्रसन्न करती हैं, बोलना और ऐसे काम करना जो प्रत्यक्ष या सामूहिक रूप से, जो उसने आदेश दिया है उसे प्रोत्साहित करना, पूजा है। इसलिए, पूजा इस्लाम के पांच कर्तव्यों को पूरा करने तक ही सीमित नहीं है। इसमें जीवन के

हर पहलू को शामिल किया गया है।

यदि कोई भगवान को प्रसन्न करने के लिए कुछ करता है, जैसे अपने परिवार को खाना खिलाना, दूसरे को सांत्वना देने के लिए कुछ अच्छे शब्द कहना, तो यह भी पूजा का एक रूप है। इसका अर्थ यह है कि सारी पूजा विधिपूर्वक भगवान के लिए ही की जानी चाहिए।

प्रतिज्ञान: व अशदुहु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु.

प्रतिज्ञा के दूसरे भाग का अर्थ यह है कि मुहम्मद (उन पर शांति हो) भगवान के दूत और उनके सेवक हैं। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को पैगंबर के आदेशों का पालन करना चाहिए और उनका पालन करना चाहिए। हमें पैगंबर (उन पर शांति हो) ने जो कहा, उनकी शिक्षाओं और उनकी प्रथाओं पर विश्वास करना चाहिए। जिन कामों को करने की मनाही है, उनसे बचना चाहिए और उनकी शिक्षा के अनुसार ही भगवान की आराधना करनी चाहिए। उनकी शिक्षाएँ भगवान द्वारा पैगंबर (उन पर शांति हो) को दिए गए रहस्योद्घाटन हैं।

पैगंबर (उन पर शांति हो) मानव जाति के अनुसरण के लिए एक उदाहरण के रूप में रहते थे। इसलिए उनके जीवन और आचरण का अनुसरण करने का प्रयास करें। भगवान कहते हैं;

तथा निःसंदह निश्चय आप एक महान चरित्र पर हैं।... (कुरान 68:4)

और भगवान कहते हैं;
निःसंदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम[1] आदर्श है। उसके लिए, जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो, तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करता हो।… (कुरान 33:21)

पैगंबर (उन पर शांति हो) को उनके शब्दों, कर्मों और कार्यों में जीवन के सभी पहलुओं में कुरान की शिक्षाओं के अनुसार जीने के लिए भेजा गया था। जब पैगंबर की पत्नी आयशा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से पैगंबर की विशेषताओं के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा, "कुरान उनकी विशेषता थी।"

गवाही (कालिमा) का दूसरा भाग यह है कि हमें अपने जीवन के सभी पहलुओं में पैगंबर का अनुसरण करना चाहिए।

भगवान कहते हैं:

(ऐ नबी!) कह दीजिए : यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो, तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुमसे प्रेम[1] करेगा … (कुरान 3:31)

"....और रसूल तुम्हें जो कुछ दें, उसे ले लो और जिस चीज़ से रोक दें, उससे रुक जाओ।..." (कुरान 59:7)

मुहम्मद (उन पर शांति हो) भगवान के अंतिम दूत हैं। इसका यह भी अर्थ है कि भगवान के अंतिम दूत मुहम्मद (उन पर शांति हो) के बाद कोई दूत नहीं होंगे।

मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता[1] नहीं हैं। बल्कि वह अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक[2] हैं। और अल्लाह प्रत्येक

वस्तु को भली-भाँति जानने वाला है।… (कुरान 33:40)

मुहम्मद (उन पर शांति हो) की पैग़म्बरी में विश्वास में उनके द्वारा लाए गए मार्गदर्शन और सुन्नत (उनके कार्य, बातें) पर विश्वास शामिल है। उनके निर्देशों का निष्ठापूर्वक पालन करने पर भी जोर देता है। पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति हो) एक इंसान थे।

हालाँकि पैगंबर (उन पर शांति हो) का चरित्र शुद्ध, असाधारण ईमानदारी, अल्लाह में अटूट विश्वास और इस्लाम में दृढ़ता थी, फिर भी वह भगवान के पैगंबर थे। इसलिए मुसलमान पैगंबर की पूजा नहीं करते.

मैं मुसलमान कैसे बनूँ?

मुस्लिम शब्द का अर्थ है "वह जो ईश्वर की इच्छा का पालन करता है"। मुस्लिम बनना (जाति, राष्ट्रीयता, कबीले की पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना) बहुत आसान है। यह बिना किसी पूर्व शर्त के एक सरल विधि है। कोई भी अकेले या दूसरों की मौजूदगी में इस्लाम अपना सकता है।
यदि कोई व्यक्ति मुसलमान बनना चाहता है, यदि उसे दृढ़ विश्वास है और इसलिए गहरा विश्वास है कि इस्लाम ही सच्चा धर्म है, तो वह विश्वास की प्रतिज्ञा "कलीमा" पढ़कर बिना किसी देरी के इस्लाम में शामिल हो सकता है। कलिमा इस्लाम के पांच स्तंभों में से पहला है। सच्ची आस्था और श्रद्धा से कलिमा पढ़ने से व्यक्ति इस्लाम में आ जाता है।

अरबी में कलिमा (विश्वास की प्रतिज्ञा) पढ़ने का प्रयास करें।

“अश-हदु अल्लाह इल्लाहा इल्लल्लाहु वह-दहु ला शरी-क लहू व अशदुहु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु.”

इस घटना के लिए किसी गवाह की जरूरत नहीं है. इसके लिए कोई बड़ा समारोह आयोजित करने की जरूरत नहीं है.' क्योंकि यह आपकी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता है. हालाँकि यदि संभव हो तो बेहतर होगा कि आप उन मुसलमानों के बीच कलिमा कहकर इस्लाम में शामिल हो जाएँ जो गवाह हो सकते हैं। लेकिन इस या किसी अन्य कारण से इस्लाम में शामिल होने में देरी न करें। मुसलमान बनने के बाद आपको स्नान करना होगा और दो रकअत नमाज़ पढ़नी होगी।

इस्लाम में शामिल होने के इरादे से स्नान करके पूरे शरीर को अच्छी तरह से साफ करने को "ग़ुस्ल" नाम दिया गया है। यह पिछली गलतियों और पापों को मिटाने और उस बिंदु तक हुए कार्यों के लिए अल्लाह से क्षमा मांगने का एक प्रतीकात्मक कार्य है।

पिछले पापों की क्षमा

… और अल्लाह के सिवा कौन है जो पापों का क्षमा करने वाला हो?... (कुरान 3:135)

आप पूरी तरह से भगवान की इच्छा के लिए इस्लाम में शामिल होते हैं। आपके पिछले पाप माफ कर दिए गए हैं और आप धर्मपरायणता

और धार्मिकता का एक नया जीवन शुरू करते हैं। पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) ने एक व्यक्ति से कहा जो इस्लाम में शामिल होना चाहता था, 'तुम्हारे पिछले पाप माफ कर दिए जाएंगे'।

पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) ने कहा: (एक साथी से) "क्या आप नहीं जानते कि इस्लाम में शामिल होने से आपके सभी पिछले पाप मिट जाएंगे? (संदर्भ: मुस्लिम, हदीस की किताब)

पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) ने कहा, "यदि कोई ईमानदारी से इस्लाम स्वीकार करता है, तो अल्लाह उसके सभी पिछले पापों को माफ कर देगा। इसके बाद गणना का काम शुरू होगा। हर अच्छे काम का सवाब 10 से 700 गुना तक मिलेगा। बुरे कर्म तभी दर्ज किये जायेंगे जब अल्लाह माफ़ी नहीं देगा।" (संदर्भ: बुखारी, हदीस की किताब)

पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) ने कहा:

इस्लाम का मार्ग सुगम है. इस पर बोझ न डालें और चीजों को कठिन न बनाएं। अल्लाह को खुश करने के लिए पूर्णता के करीब पहुंचने का प्रयास करें। सुबह, दोपहर और रात को प्रार्थना करें लाभ होगा। (बुखारी)

यदि कोई इस्लाम अपनाता है तो उसे अपने पुराने जीवन और मान्यताओं पर पछतावा होता है। इस्लाम में शामिल होने से पहले किए गए पापों के बारे में किसी को ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं है। अपनी मां के गर्भ में नवजात शिशु की तरह, जब वह इस्लाम में शामिल होता है तो उसका रिकॉर्ड साफ होता है।

इस्लाम की शिक्षाओं का पालन करने का महत्व

आपको यह जानना होगा कि मुसलमान होने का क्या मतलब है और सच्ची इस्लामी नैतिकता के अनुसार जीना शुरू करना होगा। कुरान और हदीस (पैगंबर की बातें) दोनों इस्लाम का पालन करने के महत्व पर जोर देते हैं।

भगवान कहते हैं

निःसंदेह दीन (धर्म) अल्लाह के निकट इस्लाम ही है... (कुरान 3:19)

और जो इस्लाम के अलावा कोई और धर्म तलाश करे, तो वह उससे हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में से होगा।... (कुरान 3:85)

पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) ने कहा:

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। वह बिना साथी के है. मुहम्मद (उन पर शांति हो) उनके दूत और सेवक हैं। यीशु/ईसा (उन पर शांति हो) भगवान के दूत हैं, भगवान के शब्दों का मदर मैरी पर अनुवाद किया गया और इसके माध्यम से बनाया गया।
भगवान ने उसे "हो" और "यह है" कहकर बनाया स्वर्ग वास्तविकता है। नरक की आग सत्य है, इसी प्रकार, जो कोई भी इसके अनुसार

गवाही देगा, भगवान उसे उसके कर्मों के अनुसार स्वर्ग में प्रवेश देगा। (बुखारी)

> जो कोई यह गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, अल्लाह उसे नरक की आग में हमेशा रहने से रोक देता है। पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) ने कहा.

मुसलमान होने के कुछ महत्वपूर्ण बुनियादी सिद्धांत

नेक कर्मों को स्वीकार करना (अर्थात् शाहदा/मुसलमान बनने की बात कबूल करना) निम्नलिखित दो शर्तों की पूर्ति पर आधारित है।

1. कर्म करने का उद्देश्य विशुद्ध रूप से अल्लाह के लिए होना चाहिए। प्रसिद्धि या प्रशंसा के लिए ऐसा नहीं करना चाहिए.

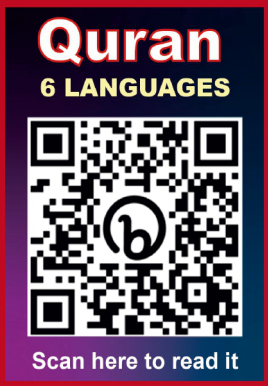
2. सभी कार्य अल्लाह के अंतिम दूत, पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) की सुन्नत (मार्गदर्शन) के आधार पर किए जाने चाहिए।

आप उन चीज़ों का उत्तर देने के लिए बाध्य हैं जिन्हें आप जानते हैं। आपको अज्ञात को सीखने के लिए भी समय निकालना चाहिए। यदि आप मुस्लिम नहीं हैं, तो यह आपका दायित्व है कि आप इस्लाम के बारे में जानने का प्रयास करें और उन लोगों से स्पष्टीकरण मांगें जो इस्लाम धर्म में उन चीजों के बारे में जानते हैं जिन्हें आप नहीं समझते हैं।

… अतः यदि तुम (स्वयं) नहीं जानते हो, तो ज्ञान वालों से पूछ लो। (कुरान 16:43)

ओह! अल्लाह, तू ही मार्गदर्शन करने वाला है। अपने सही रास्ते को समझना आसान बनाएं! उन्हें अपने रास्ते में आने दो!

आपकी जय हो! आपको बेहतर जानकारी है! एक अच्छा श्रोता!







Who is Prophet Muhammed ?

Say, "I am not something new among the messngers, nor do I know what will be done with me or with you. I only follow that whcih is revealed to me, and I am no but a clear warner.

Quran 46:9







The Quran

English, Hindi, Kannada, Malayalam, Tamil & Telugu

bit.ly/the-qurans

One God?
or
Many gods?

bit.ly/ogmgs

कु रान में यीशु और मररयम के बारे में सच्चाई बताई गई है

(बाते जो ईसाइयों को जानना ज़रूरी है)

Jesus & Mary
in Quran

உண்மையான இறைவனை தேடுபவரா நீங்கள்?

படிப்பதற்கு இங்கே scan செய்யவும்

இயேசு (அலை), மேரி (அலை) பற்றி குர்ஆனில் கூறப்பட்டுள்ள உண்மைகள்.

இறைவன் இருக்கின்றானா?
நேரில் காட்சி தருவானா?

(கடவுளே இல்லை என்பவர்களுக்காக)

Are you also a seeker of True God?

MAS Foundation Trust
10 Thacker Street
Purasawalkam
Chennai 600 084
88368 92393

Truths told in Quran about Jesus and Mary (peace be upon them).

(Things Christians Need to Know)

Does God exist?
Will He shows up?

(For an Atheist)